वेदना

(काव्य संग्रह)

रमा प्रेम-शांति

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वेदना (काव्य संग्रह)

वेदना

(काव्य संग्रह)

रमा "प्रेम शांति"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-244-9
संपादक- डॉ; प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- **antrashabdshakti@gmail.com**
वेबसाईट- **www.antrashabdshakti**
प्रथम संस्करण- 2020, रमा "प्रेम शांति"
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY RAMA 'PREM-SHANTI'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	वेदना	8
2.	आधुनिक बेटियां वीरांगना	9
3.	महिला सशक्तिकरण	10
4.	जिंदगी	11
5.	नदियाँ	12
6.	सब्र	13
7.	बदला रुप	14
8.	जख्मी सिपाही की अभिलाषा	15
9.	हाँ मुझे विश्वास है	16
10.	मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई	17
11.	उपहार	18
12.	अनुपम	20
13.	परिवर्तन	21
14.	छुट्टी	22
15.	दीप	24
16.	दर्द प्रकृति का	25
17.	हृदय	26
18.	शोहरत	27
19.	विनती मातृशक्तियों से	28
20.	शर्म	30
21.	बुरी नजरें	31
22.	पक्षपात	32
23.	मौन परीक्षा	33
24.	सजना	34
25.	बचपन	35
26.	अम्मा जी	36
27.	संकट	37
28.	वक्त	38

29.	धरोहर	39
30.	बर्ताव	40
31.	माहौल	41
32.	मुश्किल	42
33.	मन में थोड़ी लगन हो	43
34.	कम से कम	44
35.	हिम्मत	45
36.	इंतजार	46
37.	समूह	47
38.	गर्मी	48
39.	पास	49
40.	यूँ ही कह दिया	50
41.	दुख	51
42.	नारी शक्ति	52
43.	जिंदगी	53
44.	खत	54
45.	उमंग	55
46.	रिश्ता	57
47.	बारिश की पहली फुहार	58
48.	बिजली	59
49.	गीत	60
50.	बाबूजी	61
51.	रिश्ता	62
52.	हरियाली	63
53.	मजदूर	64
54.	कोशिश	65
55.	मासूम	66
56.	अबोध	67
57.	पुण्य कार्य	68
58.	भलाई	69

59.	गहना	70
60.	सागर	71
61.	सच	72
62.	एहसास	73
63.	सच्चा प्रेम	74
64.	घमंड गरीबों को	75
65.	ईद	76
66.	बदलाव	77
67.	मजदूर	78
68.	मुसाफिर	79
69.	शब्द	80
70.	मोहब्बत	81
71.	प्रश्नचिन्ह	82
72.	झूठे लोग	83
73.	आत्मा नदियो की रो रही है	85
74.	मानवता	86
75.	एक कदम भरोसे का	87
76.	पेड़ की व्यथा	88
77.	धड़कन	89
78.	पुलवामा अमर शहीदो को नमन	90
79.	बारिश	91
80.	ट्राइबल कला कृति	92
81.	मायने	93
82.	चिंतन	94
83.	प्रकृति का दर्द	95
84.	हृदय तल से नमन	96

भूमिका

सर्वप्रथम प्रकृति शक्तियों एवं हमारे देश में हुए शहीद समस्त वीर वीरांगनाओं को मात्र याद करके ही मैं अपनी सेवा हृदय तल से नमन करते हुए अर्पित करती हूँ।

सम्मानीय पाठकों, प्रकृति प्रेमी रमा "प्रेम शांति" बालाघाट (म.प्र.) का आप सभी, सादर सेवा स्वीकार कीजिये।

"वेदना" मेरी चौथी काव्य संग्रह पुस्तक है, जिसका आप पुस्तक नाम से ही समझ सकते है कि इस पुस्तक की क्या खासियत होगी, जी हाँ.... सही समझा आपने। इसमें प्रकृति के दर्द के साथ साथ, भारतीय नारी, गरीब, लाचार, असहाय, अत्याचारों, दुराचरों से पीड़ित मानव जाति की व्यथा को ज्यादा तथा मानव प्रेम, हमारे सैनिक भाईयों की इच्छा, नायक नायिका के एहसास को अंकित करने का मैंने पूरा प्रयास किया है।

वर्तमान समय एवं कुछ पूर्व के अनुभव, प्राचीन इतिहास को ध्यान में रख कर लिखा मैंने, मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप लोग इस "वेदना" को समझने की कोशिश ही नहीं बल्कि अच्छी तरह से समझेंगे। क्योंकि मुझे भी आपकी तरह अपने देश भारत से बेहद प्रेम है और विश्व गुरु मेरा ही देश बने यही सपना मैंने भी संजोया है, इसलिए हम लोगों को अपनी अच्छाईयों को तो निखरना ही है, लेकिन... अपनी बुराईयां, अपनी कमजोरी को भी पूरा ध्यान में रखते हुए उसे पूरी तरह त्यागना होगा, जिससे हमारी भारतीय एकता एक मिशाल बने।

क्योंकि हमारे देश में ही नारी को एक देवी स्वरूप मान कर पूजा जाता है, उसके बाद भी नारी पर अत्याचार, बलात्कार (जिसमें छोटी छोटी नादान, एकदम नाजुक बच्चियाँ भी) ऐसी घटनाएं जब देश में होती है और अत्याचारी, दुराचारी, बलात्कारी को बचाने के

लिए बड़े बड़े लोग, सत्ताधारी, शक्तिशाली जैसे लोग जब कुकर्मी को बचाते है तब शर्म ही नहीं बेहद दुख के साथ हमारे देश के वीर वीरांगनाओं के त्याग का खिलवाड़ होते हुए प्रतीत होता है, कि वो अपनी मातृभूमि के लिए शहीद तक हो गए देश के बाहरी दुश्मनों से लड़ते लड़ते और अपनी मातृभूमि एवं अपने देश के लोगों को बचाया, और जिन भारतीयों बंधुओं को ये देश सौंपे, वो लोग अपने देश के ही अंदर अपने ही लोगों के खून से मातृभूमि को रंग रहे है, तो उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित नहीं होती।

इसलिए मेरे भारतीय बंधुओं हमें अपनी एकता, प्रेम, त्याग, मान सम्मान, नाम को बचाएं रखने के लिए सच्चे दिल से प्रण करना होगा कि हम अपने देश की रक्षा की खातिर देशप्रेम सभी भारतीयों के बीच बनाएं रखेंगे।

पेंजिया दाई की गोद में, भारत देश ही है, हमारा सबसे प्यारा,
हम सब है, भारतवासी और "रमा" ये हमें है, जान से प्यारा।

जय भारत

प्रकृति प्रेमी
रमा "प्रेम शांति"
बालाघाट

वेदना

एक संदेश, एक कोशिश
मेरे भारतवासियों के लिए
जबसे भेजी मैंने बेटी को,
दूसरे शहर बस पढने को,
आज भी "रमा" दिल को,
बस तसल्ली देकर सुलाती है।
बेटी है सुरक्षित होस्टल में
ऐसा कह कर दिल को मनाती हूँ!
क्योंकि.. जब भी सुनती
मैं रोज रोज की खबरें
मेरा मन डर जाता है
मेरे भारत में ऐसा कैसे हो जाता है।
यहाँ तो कन्या पूजी जाती
फिर बड़े होने पर क्यों लूटी जाती है
क्या यही शिक्षा हमारी है
यह प्रश्न हमारे पाठ्यक्रम पर
हर पल फिर उठाती है
क्यों करते हो शिक्षा, संस्कृति को बदनाम
मेरे प्यारे भारतवासियो
मुझसे अब ना ऐसा देखा जाता है
बेटी तो बेटी होती है
अपनी समझो तो
नजरिया पूरा फिर बदल जाता है
ना डरे वो
अपने ही देश की धरा, गली चौराहो में
हर बहन बेटी की इज्जत हो दिल से
ऐसा संदेश हर भारतीय तक
रमा हम सबको मिलकर पहुंचाना है।

आधुनिक बेटियां वीरांगना

माँ मुझे अब परी नहीं बनना,
मैं तो समयानुसार तेज तर्रार बनना चाहूंगी,

माँ मुझे अब बेवजह नहीं रोकना,
मैं तो तेरे बेटे जैसे पूरा बनना चाहूंगी,

माँ मुझे अब शर्म नहीं करना,
मैं तो बेर्शमो का भूत उतारना चाहूंगी,

माँ मुझे अब बिंदी नहीं लगाना,
मैं तो रणभूमि में जाने वाला तिलक चाहूंगी,

माँ मुझे अब कंगनचूड़ी नहीं पहनना,
मैं तो अब तलवार उठा कर चलाना चाहूंगी,

माँ मुझे अब जल्दी विदा नहीं करना,
मैं तो तन, मन, धन से परिपक्व होना चाहूंगी,

माँ मुझे अब वीरांगनाओं को पढ़ना,
मैं तो अपने जीवन में वीरांगना बनना चाहूंगी,

माँ मुझे अब दुआ, आर्शीवाद देना,
मैं अपने नेक कार्यो से प्रसिद्ध होना चाहूंगी।

महिला सशक्तिकरण

काली बाई, सावित्रीबाई फूले जी का
अब तो सच्चा इतिहास बताओ,

महिलाओं को फूलन देवी जी की
अब सच्ची घटनाएं, कहानी सुनाओ,

झलकारी देवी के मुख्य किरदार का
अब तो सबको झलक दिखाओ,

दुर्गावती, अवंती बाई, हल्दी बाई की
अब तो बहादुरी सबको बतलाओ,

बेटियों के हर स्कूल, कालेज में
खेल में जूडो, कराटे, बाक्सिंग सिखाओ,

महिला सशक्तिकरण चाहते हो तो
जातियों का ढोंग दिल दिमाग से हटाओ।

जिंदगी

ये जिंदगी बेहद खूबसूरत होती है,
तेरे मेरे से ही ये हसीन होती है,

ये जिंदगी इंसानो को
प्रेम करना सिखाती है,
इंसान को इंसानियत का
यही चोला पहनाती है,

ये जिंदगी रिश्तों में
इंसान को बांधे रखती है,
रिश्तों से ही बंधी
इसमें जान रहती है,

ये जिंदगी बड़े बड़े
सपने दिखाती है,
पूरे ना होने पर
बहुत रूलाती है,

ये जिंदगी बड़े बड़े
इम्तिहान लेती है,
मजबूरियों से लड़ना
सबको सिखाती है,

जो लड़ ले इन मजबूरियों से फिर
"रमा" उन्हीं का जीवन सफल बनाती है।

नदियाँ

आज देश की सभी नदियाँ
अपना विशाल रूप
धारण किए हुए है,

खेल रही धरती के संग
मचल मचल वो
लहरों को ओढ़े हुए है,

पहुँच रहा है अब जल
खेतों में नहरों से
किसान बहुत खुश हुए है,

गंगा, यमुना,सरस्वती, कावेरी
और नर्मदा दाई सभी
आज लबालब भरे हुए है,

कल कल करती ध्वनियाँ
देख देख लहरों को
शहरों के इंसान डरे हुए है,

आन, बान, शान है
ये नदियाँ हमारी रमा
इसलिए मान आज भी किए हुए है।

सब्र

मत ले तू मेरे "सब्र" का इंतिहा
सब में होता है
हर चीज सहन करने का एक
अपना अपना अंदाज
कहती है पृथ्वी हम सबसे इंसान
जरा सा सुन तू
शांत होकर अपनी धरती माता की पुकार
कहती है माता हमारी
ना बिगाड़ तू मेरा संतुलन............
वरना कैसे कर पाऊंगी मैं अपने
नन्हे मुन्ने बच्चों का लालन और पोषण
तेरे मिलावटी पन से
होती हूँ मैं बेवजह बदनाम और परेशान
क्यों तू ऐसा करता है रे मेरे प्यारे इंसान
मेरे वगैर तू नहीं कर पायेगा अपना जीवन निर्वाह यंहा
फिर काहे को गुनाह कर
दुश्मनी लेता अपनी माँ से ही तू इंसान
मैंने बस तुझसे मेरी इज्जत चाही और
देनी चाही तुझे सदा प्यार और सम्मान
जमीं पे रहकर तू हो जाए बड़ा इतना
आसमान भी झुक जाए तेरे सामने और कहे
तू भी है अपनी माँ के सामान, आत्मसम्मान
से जीने वाला 'रमा', इस धरा का खुदा महान।

बदला रुप

सिसक सिसक कर रोई थी मैं उससे लिपट कर,
उसने भी सहलाया था मुझे अपना समझ कर,

मैंने पूछा क्या तुम्हे भी मुझसे बेइंतहा प्यार है,
उसने कहा, क्या ये भी कोई पूछने की बात है,

तुझे रोता देख ना सका और तू पूछती प्यार है,
तुझे और क्या सबूत दूँ मुझे तुझसे कितना प्यार है,

फिर खाई कसमे दोनो ने साथ चलेंगे जिंदगी भर,
चार कदम भी ना चल पाए वो हमारे साथ रह कर,

कैसी थी मोहब्बत, कैसी ये उनकी रूसवाई है,
कैसे करूं यकीन उस पर जिससे मैंने दिल लगाई है,

अचानक उसका बदला रूप देख मैंने भी "रमा",
मोहब्बत पे से यकीन करने की जिद्द हटाई है।

जख्मी सिपाही की अभिलाषा

जख्मी सिपाही
जैसे ही होश में
आया, उसके
होश आते ही
डॉ. ने सबको
खुशी से बताया
और बोला बदन पे
बहुत गहरे घाव हैं
फिर भी इनका
साहस कम नहीं है
सिपाही ये सुन
फौरन.....
उठ खड़ा हुआ
और उसने फिर दहाड़ा
मेरी छोड़ो, बस
दुश्मन
मेरी भारत धरा पर
पैर न रखने पाएँ
जख्म
मेरा तो भर जाएगा
लेकिन.....
मेरी अभिलाषा
मेरी माँ को कोई भी
रमा जख्मी ना कर पाए।

हाँ मुझे विश्वास है

आज अंधेरा तो कल उजाला आएगा, हाँ मुझे विश्वास है,
नदियों को सागर मिल जाएगा, हाँ मुझे विश्वास है।

दुख के बाद फिर सुख आएगा, हाँ मुझे विश्वास है,
आया हुआ तूफान फिर थम जाएगा, हाँ मुझे विश्वास है।

प्रकृति हम इंसानों को माफ करेगी, हाँ मुझे विश्वास है,
उजड़े बाग पर फिर बहार आयेगी, हाँ मुझे विश्वास है।

प्रकृति परिवार फिर खुशहाली लायेगी, हाँ मुझे विश्वास है,
प्रकृति पुजारियों की ही जीत होगी, हाँ मुझे विश्वास है।

कर्मठता का पर्याय ही मानव है, हाँ मुझे विश्वास है,
उचित समय ही सही दवा है, हाँ मुझे विश्वास है।

जन्म हुआ तो मृत्यु निश्चित है, हाँ मुझे विश्वास है,
कल फिर नया सबेरा होगा "रमा" हाँ मुझे विश्वास है।

मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई

प्राचीन काल से ही आ रही है, कई मुसीबतें,
तब भी वीर योद्धाओं ने लड़ा था जमके सबसे,
आज भी आ रही है, फिर वैसी ही मुसीबतें
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई,

पहले भी कमजोर समझा जाता था मातृशक्तियों को,
और आज भी प्राय: नाजुक समझा जाता है मातृशक्तियों को,
हुनर तो आज भी फिर दिखाना होगा मातृशक्तियों को,
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई,

कलम पकड़ा है तो लिख डालो जो आज सच है,
तेरेमेरे का भाव खत्मकर लिख डालो जो आज सच है,
इंसानियत का बस पालन कर लिख डालो जो आज सच है,
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई,

आया है फिर दहशत फैलाने धरती पर कोरोना,
घर में बैठो, बाहर ना निकलो, भागेगा फिर कोरोना,
सोशल डिस्टेंस में रहकर सब काम करो "रमा"
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई,

उपहार

प्रकृति परिवार से
अब तो मानव आज ही सीख
शांत भाव से
अपना कार्य कैसे वो
किए ही जा रही है,

और
सबको बराबर मान देती
नहीं है उसमें भेदभाव के गुण
और ना ही
मुंह देखे काम वो
किए जा रही है,

देख
माँ धरती को
उसकी गोद में बैठ
सभी मानव और जीव जन्तु
बेहद इठलायें जा रहे है,

देख
पिता स्वरूप
आसमान को
जो हमारी रक्षा
बिन बोले ही किए जा रहे है,

देख
भाई बहन से ये पर्वत पहाड़
और ये नदियाँ सारी
जीने के लिए
हमें ताजी सामग्री
मुफ्त में दिए जा रहे है,

देख
यह सब मिलकर
हम लोगों को आज भी
निस्वार्थ भाव से पाले जा रहे है,

देख
हम सब मिलकर
अपने स्वार्थ के लिए
उसको ही कितना नुकसान
दिन ब दिन पहुँचाते जा रहे है,

देख....... मानव
प्रकृति परिवार के
अनमोल उपहार का
हम लोग आज भी
अपमान पर अपमान किए जा रहे है,

इसलिए
अब भी संभल जा मानव, वरना बाद में बहुत ही पछतायेगा,
जिस दिन खत्म हुई उसकी ममता, तेरा जीवन नष्ट हो जाएगा।

अनुपम

मानव तू पृथ्वी पर हर जीवों में सबसे बड़ा ही बलशाली है,
तेरे में ही सदैव नये नये सृजन करने की ही कलाकारी है,

तू ही बुद्धिजीवी, तू भी महान तुझमें ही बेहद समझदारी है,
तेरी ही करनी से फिर आज बच सकती ये पृथ्वी जो हमारी है,

प्रकृति शक्ति द्वारा पृथ्वी की सबसे अनुपम कृति मानव हमारी है,
अब भी संभलो और छोड़ो सब भेदभाव इसी में समझदारी है,

विषम परिस्थितियों में जूझ रहे जो उनकी करो दूर जो परेशानी है,
देश के हालात पर कुछ दान करो ये हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है,

आज बना है जो माहौल उससे सबको मिलकर लड़ना होगा "रमा"
इसी में हम सभी बुद्धिजीवी मानव की नैतिक जिम्मेदारी है,

परिवर्तन

अब तो मानव तुझे हर हाल में
प्रकृति के अनुसार चलना ही होगा,

तू नहीं है बड़ा हर हाल में
अब तुझे ये मानना ही होगा,
प्रकृति शक्ति ही है सबसे बड़ी और
उनकी देन तुझे ये समझना ही होगा,

आज बताई प्रकृति ने
हमको रहना मानव जैसे
और मानवता धर्म हमारा
ये सच्चाई स्वीकारना ही होगा,

किसानों का महत्व देख
आज ना कोई भूखा है
भले गरीब हो ये, लेकिन
इनकी इज्जत करना ही होगा,

भगवान के नाम डाॅ, नर्स,
पुलिस,सफाई कर्मचारी, मीडिया
प्रशासन अधिकारी, जात देखे बिना
इन्हें सलूट करना ही होगा,

अब भी संभल जा और कर अपने
स्वभाव में परिवर्तन तेरे लिए यही आज सही होगा।

छुट्टी

देखों साथियों
आज मिली है
जंगलों में
रहने वाले
जीव जन्तुओं को
आजादी
बिना डरे
कर रहे विचरण
आज वो अपने ही
आंगन में।

इंसान नहीं
जता पा रहा है
आज उन पर
अपना अधिकार
इसलिए मस्ती में
घूम फिर रहे
आज वो अपने ही
आंगन में।

चहक रही है
देखो चिड़िया
आज इस पेड़ से
उस पेड़ में
नहीं है चिंता उसे

गुलेल की
खेल रही कूद रही
आज वो अपने ही आंगन में।

कल कल कर रही है
देखो नदियाँ
निर्मल हुआ
उसका दामन
लहर लहर, मचल मचल
खुशी से मिले
चट्टानों से
आज वो अपने ही आंगन में।

मिलन हुआ
देखो प्रकृति का
आज अपने ही परिवार से
छुट्टी मिला दी
हम सबको भी
और मिल रही
आज वो अपने ही
आंगन में रमा
अपने ही परिवार से।

दीप

आओ हम सब मिलकर आज
पुण्य भाव से एक दीप जलाएं
ना हो अंधेरा मेरे भारत देश में
ऐसी प्रार्थना अपने ईष्ट से कर जाएं।

मिट्टी के दिए ही शुभ होते है
यही बात हम सभी को बताएं
ना खरीदे कोई विदेशी वस्तुएं
स्वदेशी सामान ही सब अपनाएं।

ना हो अब कोई खेल जुँआ का
अंधेरी रात में ऐसा उपाय बताएं
ना हो बर्बाद घर, द्वार किसी का
ऐसी परंपरा को हम सब अपनाएं।

एक दूसरे के प्रति भरी नफरतें
राकेट में भर, जलाकर दूर भगाएं
फिर खुशी से गले मिलकर एक
प्रेम से भरी बाती का दिया जलाएं।

गरीब अमीर के फासले कम हो
ना लुटे कोई अपना ऐसा देश बनाएं
ऐसी दीवाली का पर्व हो "रमा"
भारत देश को जो पूरा समृद्ध बनाएं।

दर्द प्रकृति का

प्रकृति हम इंसानों से बेहद नाराज हो गई है,
देखो, इसलिए वो अपना असर दिखा रही है,

आज बादल भी खूब जोर जोर से गरज रहे है,
देखो, आसमान में कैसी बिजली चमक रही है,

कोरोना बनकर पृथ्वी पर आई भीषण महामारी जो है,
हम सबके अंदर बहुत ही दहशत फैला रही है,

प्रकृति परिवार के सभी सदस्य अभी एक हो गए है,
देखो, धूप ना निकले, सावन के जैसे पृथ्वी माहौल बना रही है,

इसलिए संभल जाओ अब भी मेरे बुद्धिजीवी प्यारे साथियों,
कुदरत भी हम सबसे एक पक्का वचन मांग रही है,

नहीं नुकसान पहुँचायेंगे हम अब माँ पृथ्वी को रमा
ऐसी तपस्या हम मानव से पूरी तरह करवाना चाह रही है।

हृदय

सोचो, उस माँ का हृदय कैसा हुआ होगा,
जिसने अपनी बेटी को खून से लतफत देखा होगा,

सोचो, उस बाप के मन को कैसा लगा होगा,
जिसने डोली की जगह अर्थी को कंधा दिया होगा,

सोचो, उस भाई की आत्मा को कैसा लगा होगा,
जिसने बहन की रक्षा का वचन पूरा नहीं किया होगा,

सोचो, उस बहन के दिल को कैसा लगा होगा,
जिसने दुखसुख की सच्ची साथी को अंतिम विदा दिया होगा,

सोचो, उन सुनहरे सपनों को कैसा लगा होगा,
जिसने सुनहरी जिंदगी के सपने पूरे चूर होते देखा होगा ।

सोचो, उन परिवारों को कैसा लगा होगा रमा
जिसने उम्मीद ए चिराग को अपने सामने बुझते देखा होगा।

शोहरत

नहीं रखती मैं सोच ऐसी
कि, कहीं मेरे अच्छे काम से
मेरा खूब नाम हो जाए

बस ..... दुआ करती हूँ
मेरे काम के बदले ईनाम
ये मिले, कि भूखों का पेट भर जाए।

नहीं रखती मैं सोच ऐसी
कि मुझे अमीरों जैसी
खूब शान शोहरत मिल जाए

बस ...... दुआ करती हूँ
जिस परिवार की छत ना हो
उसे रहने लायक घर मिल जाए।

नहीं रखती मैं सोच ऐसी
कि मुझे किसी महापुरुषों के
नाम जैसे, ख्याति मिल जाए

बस ...... दुआ करती हूँ
देश में दिखावे की एकता खत्म हो
बल्कि रमा एकता सच में दिख जाए ।

विनती मातृशक्तियों से

उठो भारत की नारियों,
वक्त नहीं अब सोचने का,
अब तो वक्त आ गया है,
फूलन देवी जैसे बनने का,

उठो भारत की नारियों,
वक्त नहीं अब न्याय मांगने का,
अब तो वक्त आ गया है,
खुद जज बन न्याय करने का,

उठो भारत की नारियों,
वक्त नहीं बस प्रेम, श्रृंगार का,
अब तो वक्त आ गया है,
वीरांगनाओं के इतिहास पढ़ने का,

उठो भारत की नारियों,
वक्त नहीं अब मोमबत्ती जलाने का,
अब तो वक्त आ गया है,
बलात्कारियों को पूरा जलाने का,

उठो भारत की नारियों,
वक्त नहीं अब जातियों में बंटने का,

अब तो वक्त आ गया है,
नारी सिर्फ नारी जाति की बताने का।

उठो भारत की नारियों,
वक्त नहीं सिर्फ पूजा, उपवास करने का,
अब तो वक्त आ गया है,
हथियार उठा चलाके ताकत दिखाने का,

उठो भारत की नारियों,
वक्त नहीं अब घबराने का,
अब तो वक्त आ गया है "रमा"
नारियों को नारियों का साथ देना का।

शर्म

आज नहीं है, रिश्तों में वो विश्वास
जैसे पहले हुआ करते थे

आज नहीं है, रिश्तों में वो प्रेम,स्नेह
जैसे पहले हुआ करते थे

आज नहीं है, रिश्तों में वो एहसास
जैसे पहले हुआ करते थे

आज नहीं है, रिश्तों में वो सम्मान
जैसे पहले हुआ करते थे

आज नहीं है, रिश्तों में वो शर्म, हया
जैसे पहले हुआ करते थे

आज नहीं है, वैसे मानव रमा
जैसे पहले हुआ करते थे।

बुरी नजरें

निकलती जब भी मैं, घर से माँ,
सबकी नजरें मेरी ओर आ जाती है,

ये जमाने की नजरें मुझ से माँ,
अब बिल्कुल नहीं झेली जाती है,

ऐसी ही नजरों की शिकार थी माँ,
वो मासूम बहनें याद आ जाती है,

कुछ नजरें तो, नजरों से ही माँ,
वो बुरी घटनाएं याद दिला जाती है,

हम महिलाओं में दहशत फिर माँ,
ऐसे माहौल से पूरी भर जाती है,

फिर कैसे कहूँ आजाद हूँ मैं माँ,
बेटियाँ तो आज भी मारी जाती है ।

पक्षपात

मेरे प्यारे देश पे रहने वाले इंसान,
देश में ही गद्दारी तू करता क्यों है,

मिल जाता है जब तुझे कोई पावर,
उस पर फिर घमंड तू करता क्यों है,

बड़ीबड़ी गल्तियां करके भी निर्दोष,
अपने को साबित तू करता क्यों है,

छोटे छोटे मासूम बच्चों की हत्या,
बदले की भावना से तू करता क्यों है,

प्यारी बेटियों व नारियों का बलात्कार,
गरीब व लाचार देख तू करता क्यों है,

सामने होते हुए भी देख अत्याचार,
फिर भी पक्षपात तू करता क्यों है।

मौन परीक्षा

सुन नर
मैं हूँ नारी
मुझमें भी है पूरी समझदारी
लेकिन.......
मौन
मैं सिर्फ इसलिए रहती
ताकि प्रेम व शांति माहौल में बनी रहे
मैं कहलाती हूँ ममता की मूरत
वो सृष्टि पर हमेशा सिद्ध रहे।
लेकिन......
हे..... कलयुग के मानव
देख रही हूँ मैं भी सब
नारी की ही ली जाती है
हर युग में अग्नि परीक्षा
जब किसी नारी की इज्जत लूट
मौत के घाटउतारी जाती
तब मेरे मन में ज्वाला
दिमाग में नफरत आती है
बुद्धिजीवी और समझदार
कहलाने वाले मानव
तेरी बुद्धि की तभी परीक्षा हो जाती है
मैं मौन इसलिए होती
क्योंकि, मेरी नजरों से पूरी मानव जाति
पूरी तरह फिर उतर जाती है।

सजना

सुबह सुबह तेरे संग गरमा गरम चाय सजना,
हसीन संग खुशनुमा पूरे दिन को बनाती सजना,

सुबह सुबह उस पर फिर तेरा गुलाब देना सजना,
जिंदगी में और फिर ढेर सारा प्यार बढ़ाती सजना,

मायके का घर, आंगन भी याद दिलाते हो तुम सजना,
जब पहली बार मेरे हाथ की चाय पिए थे तुम सजना,

चाय जैसे मिठास हमारे जीवन में बनी रहे मोरे सजना,
चाय,गुलाब का सिलसिला कभी ना खत्म हो मोरे सजना,

तेरे संग ही हो मेरी हर सुबह शाम प्रिय सजना,
तुझसे मिले प्यार से मैं हो गई भाग्यशाली सजना,

बचपन

आज जब भी याद आता है बचपन
मन में ढेर खुशियाँ लाता है बचपन

बात बात में रूठना था बचपन
फिर जल्दी मान जाना था बचपन

छल कपट समझता ना था बचपन,
छोटा बड़ा नहीं जाना था बचपन,

जातिधर्म से बहुत दूर था बचपन,
सब अपने लगते ऐसा था बचपन,

खेल कूद जल्दी सोना था बचपन,
उठते माँ से लाड़ करना था बचपन,

माँ के दूर जाते ही रोता था बचपन,
रमा ऐसा प्यारा सा था बचपन।

अम्मा जी

चूल्हा फूंकने जब भी मैं बैठती,
बहुत याद आती तुम्हारी अम्मा जी,

तुम भी सुबह सबसे पहले उठकर
सबका खाना बनाती थी अम्मा जी,

परिवार के पूरे अपनों को खिलाकर
सबसे बाद में तुम खाती थी अम्मा जी,

फिर चूल्हा चौका पूरा साफ कर,
आखिरी में तुम सोती थी अम्मा जी,

बाहर से बाबूजी लाते थे कमाकर,
अंदर घर तुम संभालती थी अम्मा जी,

अब मैं भी तुमसा भार संभाल कर
तेरे पग चिन्हों पे चल रही अम्मा जी।

संकट

आई धरती पर ऐसी महामारी,
जिसका नाम है कोरोना
कोई काम नहीं आ रहा बस,
सबके मुहँ पर है कोरोना

संकट की घड़ी में आज देखो,
सब घर, पट बंद हो गए,
डाॅ, नर्स ही काम आ रहे बस,
भगवान के नाम पर कोरोना

शासन प्रशासन है आज देखो,
ड्यूटी पर बेहद सख्त हो गए,
एक ही आदेश दे रहे बस,
घर में बंद रहो देख कोरोना

पिस रहा है फिर आज देखो,
गरीब और ज्यादा गरीब हो गए,
कोई नहीं इनकी सुनने वाला,
बिन तेरे मर गए देख कोरोना

महामारी का असर आज देखो,
शहर से अच्छे गाँव हो गए,
सब के सब अछूत हुए रमा
बड़ेबड़े लोगों ने लाए कोरोना

वक्त

कभी सोचा भी ना था, कि ऐसा भी वक्त देखने में आएगा,
आधुनिक युग का पढा लिखा मानव भी राक्षस बनता जाएगा,

मासूम बच्चो को तक दुश्मनी का निशाना बनाया जाएगा,
बलात्कार कर, फिर उसे मौत के घाट उतारा जाएगा,

गरीबो को पेड़पौधे लगाओ के नारे चिल्लाकर बताया जाएगा,
अमीरो को जंगल देकर बड़े पेड़ चुपचाप कटवाया जाएगा,

पराया है तो उसके गुनाह की सजा कड़ी दिलवाया जाएगा,
अपना है तो उसे बचाने सच्चे सबूत को तक मिटाया जाएगा,

देश में व्यंग्य का स्तर इतना ज्यादा गिरता ही जाएगा,
पूरा मीडिया पक्ष विपक्ष की बहस से ही भर जाएगा,

देश का ही नागरिक देश में ही नफरत फैलाता नजर आएगा,
और दुश्मन के नाम पर पाकिस्तान को सिर्फ दुश्मन बताया जाएगा,

बहुत ही दुख होता है मेरे देश की ऐसी स्थिति देखकर रमा
सोचती हूँ बनाई नफरत की खाई को भरने कौन सा युग आएगा।

धरोहर

भारतीय भूमि पर हमारे पूर्वजों का गढ़, किला आज भी विराजमान है,
प्राचीन इतिहास बताता,हमारी धरोहर बेहद गौरवशाली और महान है,

पूर्वजों का अनुभव, योग्यता उस जमाने में बेहद खास रहा है,
तभी तो बनवाएं ऐसे राजमहल जो आज भी अनोखा दिख रहा है,

देश के कोने कोने पे हमारी संस्कृति हमारी मुख्य बड़ी पहचान है,
लेकिन, उसे भी मिटाने लगी होड़ जो बचा रहे अपनी पहचान है,

मजबूत बुलंद इमारत, दृढ़ इरादों का बखूबी बखान कर रही है,
हमारे पूर्वज अडानी, अंबानी से कम नहीं रहे, ये भी बता रही है,

"रमा" बहुत दुख होता आज हमारे पूर्वजों की धरोहर देखकर,
चालाक, बेईमानों ने कर ली, उसको अपने नाम यह देखकर।

बर्ताव

रोज कमा के खाने पीने वालों का
बहुत ही आज बुरा हाल हुआ है
कोरोना महामारी तो लाने वाले बच गए
लेकिन देश के गरीबों मजदूरों का बहुत ही
बुरा हाल हुआ है।

कोरोना महामारी से जो नहीं मरा वो
गरीब मजदूर अब भूख से मर रहे है
हजारों किलोमीटर चल चल कर
वो अपने पैतृक स्थान
जान बचाने की उम्मीद से बेबस होकर
पहुँच रहे है।

चार रोटी कमा कर ला रहे मजदूर
रेल से कैसे कट गए
रहस्य क्या है?
ये बिल्कुल
सबके समझ के परे है।

ना किया किसी के साथ
बुरा बर्ताव
और ना ही कोई चोरी की थी
फिर भी मजदूरों के साथ
आज बहुत बुरा 'रमा' बर्ताव हुआ है।

माहौल

आज फिर से जिंदगी की, एक नयी शुरुआत होने लगी है,
देखो अब घरों से बाहर, लोगों की भीड़ भी होने लगी है,

लेकिन......बाहर निकलो तो, दिल में एक भय सा बना रहता है,
दिमाग में कहीं ना कहीं कोरोना का भयानक डर बसा रहता है,

जरा सी छींक, सर्दी, खांसी लोगों को अपने आप दूर करने लगा है,
लाख कोशिशों के बाद भी, शक लोगों के अंदर भरने लगा है,

गरीब, मजदूर तो अपनी, गरीबी, लाचारी पर बेहद रो रहा है,
अमीर भी अपनी व्यापारी स्थिति ठीक करने के लिए परेशान हो रहा है,

बढ़ रही है जब ये, दिनों दिन महामारी पृथ्वी पर रमा
फिर कैसे मान ले, आज का माहौल पूरा ठीक ठाक हो गया है।

मुश्किल

आज धरती पर
बड़ी अजीबोगरीब समस्या
आ खड़ी हुई है
जो कभी सपने में
सोचा भी ना था
ऐसी विकट समस्या आई हुई है
इंसान, इंसान के
करीब जाने से भी डरेगा, मरेगा
ऐसा कभी किसी ने
सोचा भी ना था
कोरोना महामारी ने
इंसान को सिर्फ इंसान समझा
ना कि
अमीर गरीब
बड़े बड़े देश
इसकी चपेट में आए हुए है
आज सबसे बड़ी समस्या ये है कि
इस मुश्किल की घड़ी में
जो लोग सबसे ज्यादा
सब्र को अपना लिबास
मनोबल, धैर्य का गहना पहने हुए थे
वो सब उतार कर
मौत को भी
रमा गले लगाने में पीछे नहीं हट रहे है।

मन में थोड़ी लगन हो

हारी बाज़ी भी जीत सकता है,
अपनी ताकत खुद बन सकता है,
सब कुछ कर सकता है इंसान,
बस मन में थोड़ी लगन हो,

बिगड़ा माहौल भी सुधर सकता है,
नेक इंसानों का युग बन सकता है,
मानव धर्म अपना ले अगर सभी मानव,
बस इसे करने की मन में थोड़ी लगन हो,

राष्ट्रप्रेम, भाव से कल्याण हो सकता है,
भारत और फिर समृद्ध बन सकता है,
जाति, धर्म पूरा त्याग दे इंसान रमा
बस भारतीयता की मन में थोड़ी लगन हो।

कम से कम

हम भारतीय गरीब, मजदूरों के दिल की, ये आवाज है साहेब,
बस.... एक बार तो, कह दिए होते, हम लोगों से भी साहेब,

चले जाओ लौटकर तुम सब अपने अपने गाँव बोलते तो साहेब,
हम ना कोई शिकवा, शिकायत करते फिर आप लोगों से साहेब,

कम से कम, एक बार उनके, बारे में सोचो जो, मर गए साहेब,
हजारों किलोमीटर जो चले, उनसे एक बार, जरा मिल तो लो साहेब,

हम लोगों के काम की भी बदौलत, आप लोग का वजूद है साहेब,
एक बार तो अपना बड़प्पन, इंसानियत के नाते दिखा दिए होते साहेब,

कम से कम, एक बार तो, सोच लेते राष्ट्र हित में भी साहेब,
बड़ी बड़ी इमारतों, निर्माणों की तरफ भी देख लिए होते साहेब,

हम लोगों का भी, बहुत बड़ा हाथ है, राष्ट्र निर्माण में साहेब,
बस, हम लोगों को गरीब नहीं भारतीय नागरिक समझ लिए होते साहेब।

हिम्मत

बहुत सुना था
हमने भी
गीत, कहानियों, बहादुरी के किस्से में
लेकिन....
आज हमने सच में
फिर सुन और देख लिया।

विश्व गुरु बनने की होड़ में
भारत सबसे आगे है
उसी देश की
भारतीय नारी कहलाने वाली
ज्योति एक मजदूर
मजबूर बाप की ऐसी बेटी
जिसने कोरोना महामारी के चलते
लॉक डाउन के समय
जब बस, ट्रेन के
पहिए पूरी तरह रोक दिए गए थे
तभी इसी भारतीय नारी ने
अपनी हिम्मत दिखाई
अपनी साइकिल पर
अपने पिता को बैठाकर
बारह सौ किलोमीटर
साइकिल चलाकर
अपने गाँव पहुँच गई।

इंतजार

आज भी देखती है
एक टक टकटकी आंखों से
निर्भया, पायल, मड़कम, शुभांगी
प्रियंका, आसिफा के माता पिता की आंखें।

अभी आएगी उनकी बेटी
और आकर गले से लग कर कहेगी
माँ.... बाबा... किसे देख रहे थे? मुझे.... ना!
देखो, मैं आ गई
अब तुम लोगों का इंतज़ार खत्म हुआ।

हाँ......हाँ...... बेटा
हम लोगों को बस... तेरा ही इंतजार था
तू आ गई
अब ना ये आंसू बहेंगे हमारे
आ तुझे जी भर के प्यार कर लेने दे
और अब ना जाना
तू कहीं भी अकेले, हाँ...............।

पल भर में ये प्यारा ख्वाब
पूरा टूट जाता है
उनको जब अपनी बेटी के साथ हुआ
दुराचार याद आता है
निकलते आंसू कहते है
अब ये इंतजार कभी ना खत्म होने वाला है।

समूह

मेरे देश के
मजदूरों का
आज हालात देखो
हजारों किलोमीटर
तेज गर्मी, धूप में पैदल चल कर
अपने अपने गाँव पहुँच रहे
इनका कमाल देखो।

पैर में पड़ गए छाले, फफोले
फिर भी वो चल रहे है
छोटे छोटे बच्चे भी
अपने परिवार संग
रोते रोते चल रहे है।

गरीब मजदूरों का हाल
कोरोना महामारी से कम
भूख प्यास से ज्यादा,
बहुत ज्यादा खराब हो गया
बेहद दुखी मन से ही सही
लौट रहे फिर
उनका पूरा समूह
एक नई उम्मीद लेकर
अपने गाँव की ओर
उनको अब रमा
अपने गाँव से प्यार हो गया।

गर्मी

चैत्र, बैशाख की भरी दोपहर
तेज धूप और भीषण गर्मी में भी
आधे से अधिक भारतीय नागरिक
हर चुनाव में वोट देने वाला
हजारों किलोमीटर पैदल चल कर ही
अपने अपने गाँव पहुँच गया।

और आज भी बहुत से भारतीय बंधु
वापस आ रहे है
उनकी भूख प्यास का क्या कहना
उनकी आदत सी हो गई मानो
हाँ.........कसूर, बस..... इतना है
उसने गरीब, मजदूर परिवार में जन्म लिया
और भारत निर्माण का बस.....सोचता है।

उसी मेहनत की कमाई से वो
अपना परिवार पालता है और
भारत की माटी पर
अभिमान हरदम करता रहता है
भारत माता की जय के साथ
वंदे मातरम्, अपनी मातृभूमि पर
खड़ा रहकर जोर जोर से कहता है
ऐसा मेरे भारत का गरीब
रमा जिसके दिल में भारत देश रहता है।

पास

कैसे कह दूँ कि, वो मेरे साथ नहीं है,
कैसे कह दूँ कि, वो मेरा प्यार नहीं है।

मेरी तो सुबह ही उसके नाम से होती है "रमा",
कैसे कह दूँ फिर कि वो मेरे पास नहीं है।

खोलती हूँ आँखे तो
उसका चेहरा सामने होता है,
उतरती हूँ पलंग से तो
उसका हाथ मुझे थामें होता है,

सूर्य की किरणों सा
मेरा वो ही उजाला होता है,
सुहानी शाम को छत पर
मेरे साथ वो बैठा होता है,

चांदनी रात को बाहों में
मुझे वो समेटा होता है,
हर रात बेहद करीब
मेरे वो ही तो होता है,

हर ख्वाबों में रमा
वो ही वो दिखता होता है।

यूँ ही कह दिया

कैसे पूछती मैं उनसे,
कैसे कहती मैं उनसे,
पहले पहले प्यार का,
कैसे करती इजहार उनसे,

बहुत लम्बा चलता रहा,
फिर यह सिलसिला,
दोनों से नहीं गया रहा,
मौन छोड़ा दिल मिला,

बातों ही बातों में,
फिर हमने, उनसे,
यूँ ही कह दिया,
हाँ तुमसे प्यार है मुझे,

बातों ही बातों में,
फिर....... वो भी,
मान गए "रमा"
हाँ मुझसे प्यार है उन्हें।

दुख

प्रकृति परिवार ने आखिर अपना मान दिखा ही दिया,
वो ही है मानव से बड़ी वही रूप दिखा ही दिया,

कोरोना के बहाने से ही सही अपने को सेनेटाइज कर लिया,
अपना पूरा प्राकृतिक सौंदर्य फिर उसने बढ़ा ही लिया,

जंगलों के जीव जन्तुओं को दहशत बिन विचरण करा दिया,
सभी पंक्षियों को खुले आसमान के नीचे पंख फैलाएं उड़ने दिया,

जानती थी पृथ्वी कभी नहीं सुधरेगा ये मानव "रमा"
इसलिए अपना दुख कुछ तरह मानव को बता दिया।

नारी शक्ति

देख नर मैं, तेरी चुंगल से, स्वतंत्र हो रही हूँ, धीरे धीरे,
दबा रखा था, जो तूने मुझको, उभर रही हूँ मैं, धीरे धीरे,

तेरी करनी ही तू, भुगत रहा है,
अब तो समझ जा, धीरे धीरे,
नर से नारी, नारी से नर है,
नहीं समझ पाया तू धीरे धीरे,

गुलाम बना रखा था तूने मुझको,
ना समझा था मान मेरा धीरे धीरे,
उठा लिया अब मैंने भी ये औजार,
तू भी समझ जा अब धीरे धीरे,

अत्याचारी,दुराचारी मानव दूर नहीं,
अब तेरी बरबादी, होगी धीरे धीरे,
बलात्कारी नर अब तेरी खैर नहीं,
बन रही हूँ मैं फूलन देवी धीरे धीरे,

झूठ झूठ तूने बहुत पढ़ाया मुझे,
समझ गई सब अब मैं धीरे धीरे,
अबला,कमजोर नहीं,सबला हूँ मैं,
नारी शक्ति दिखाऊंगी तुझे धीरे धीरे,

देख दुर्गावती, झलकारी, अवंती को, और पढ़ सिन्धु सभ्यता धीरे-धीरे,
कैसे राजपाट संभाल रखा था "रमा", इन सबको जानना होगा धीरे धीरे।

जिंदगी

एक महामारी कोरोना ने,
सच्चाई से रूबरू करा दी,
कौन है भगवान, दाता,
अच्छे से पहचान करा दी,

अमीर गरीब में भेदभाव,
खुल्लमखुल्ला दिखा दी,
देशी लोग पिटे, मरे, कटे,
बाकी को गाली खिलवा दी,

बड़े लोगों को हवाई जहाज,
छोटों को पैदल चला दी,
कैसे रखते संयम वो लोग,
पेट की आग ये करवा दी,

ऐ जिंदगी ....तूने भी,
ये क्या हालत बना दी,
गरीब को गरीब अमीर को,
और "रमा" अमीर बना दी।

खत

बहुत भेजते थे पहले,
प्यार भरे, संदेश,
आखिर आज तुम्हें,
क्या हो गया है?

बहुत करते थे पहले,
हर बात मुझसे साझा,
आखिर अब तुम्हें,
क्या हो गया है?

माना कि तुझे मुझसे,
दूर जाना था एकदिन,
लेकिन इस तरह जाओगे,
ये सोचा ना था मैंने,

कम से कम जाते जाते,
एक बार तो मिलते,
या फिर आखिरी खत,
मेरे नाम लिख जाते।

उमंग

हाँ, बस ......
कुछ साल
पहले ही तो
एक उम्मीद की
किरण जागी थी,
बेटा लगा था
फौज की नौकरी पर
गाँव में रहने वाले
माता पिता को
अच्छे दिन की तमन्ना
पूरी होती हुई दिखी थी,
बहुत खुश थे
वो लोग
मन में उनके
नयी नयी उमंगें
जाग रही थी,
पढ़ाई के लिए
साहूकार से लिया कर्जा
पूरा वापस कर
पुराने टूटे फूटे
मकान को सुधराकर
बेटे के लिए
सुंदर बहु
लाने की तीव्र इच्छा
हो रही थी,

कि बस.......
आर्मी हेडक्वार्टर से
फोन आया
भारत माता का लाल
भारत माता के लिए
शहीद हो गया,
माता पिता का सपना
पूरा पूरा चूर
हो गया,
दिल में पत्थर रख
दोनों ने बेटे को
अंतिम विदा दी
और कहा बेटा
तू कब इतना बड़ा
हो गया था
मातृभूमि के खातिर
खुशी खुशी
शहीद होने का
ठान लिया था
आज पता लगा
तुझे चिंता
हमारी ही नहीं
बल्कि मातृभूमि की भी
हो रही थी।

रिश्ता

ना जाने क्यूँ?
हम दोनों के बीच,
एक अजीब सा,
कशिश भरा "रिश्ता"
हो गया है।
ना चाहते हुए भी,
मैं उसकी, वो मेरा,
हमदर्द, हो गया है।
जिंदगी में अब वो,
मेरा बड़ा अजीज दोस्त,
हो गया है।

ना जाने क्यूँ ?
सुबह उठते से ही,
मुझे उसकी बेहद,
फिक्र होती है,
क्या कर रहा, कैसा होगा,
कुछ खाया पिया,
होगा भी की नहीं,
बस..... यही "रमा"
हरदम सोचती होती है।

बारिश की पहली फुहार

मेरा पूरा भीगा बदन,
उसमें तेरा फिक्र करना,

प्यार का पहला एहसास,
हम दोनों का जिक्र करना,

यही वो प्यारा एहसास था,
दोनों को करीब लाया था,

इन बारिश की बूंदों ने,
हम दोनों को मिलाया था,

हाँ, मुझे अच्छे से याद है,
क्या, तुम्हें भी याद है?

हमारी पहली मुलाकात,
बारिश की पहली फुहार,

हौले हौले भिगा रही थी,
तेरे मेरे तन मन को,

हाँ, मुझे अच्छे से याद है,
क्या, तुम्हें भी याद है ?

बिजली

छेड़छाड़ बलात्कार, अत्याचार के कारण
अब तो बेटियों को कोमल, परी नहीं बनाना है हमें "रमा"
अब तो उन्हें, दामिनी, बिजली, अंगार बनाना होगा हमें,

मेरे प्यारे देश में बाहर से आए
शरणार्थियों, आक्रमणकारी लोगों ने सदियों से
नारी जाति का अपमान किया है।
बलात्कार, अत्याचार कर
मासूमो पर हमेशा वार किया है।
बहन बेटियों की आड़ में
राज्य, पाट अपने नाम किया है।

झूठी परम्पराओं, अंध विश्वास फैला कर
प्रकृति प्रेमियों की मूल पहचान छिपा दिया है।
जिस नारी शक्ति या उनके कुटुम्ब ने
इन दुराचारियों का विरोध या सामना करा उन्हें
इन लोगों ने मिलकर पूरा बदनाम किया है।

इसलिए अब मैं कहती हूँ
हमारी बहन बेटियों
तुम सब सच्चा प्राचीन इतिहास पढ़ो
हमारी वीरांगनाएं, दुर्गावती, मरावी, झलकारी बाई
हल्दीबाई भील, कालीबाई, लक्ष्मीबाई, अवंतीबाई,
सावित्रीबाई, फातिमाबी, फूलन देवी,
मदर टेरेसा, जैसी मातृशक्तियों के जैसे समयानुसार
दामिनी, बिजली, अंगार बनने का प्रयास करो।

गीत

ल....ला....ला....ला....
ल....ला....ला....ला....

मेरा प्यारा देश है भारत
मुझे जान से प्यारा......

पेंजियां दाई की गोद में
वीरों का बसेरा ....
दुर्गावती, अवंती बाई का
यहाँ पर था डेरा.....

दुर्गावती, दलपतशाह मरावी की
यही थी महारानी........
गढ़ मंडला, मदन महल
है इनकी ही निशानी

कमलापति, प्यारी सुंदरी
भूपाल सिंह की रानी...
भोपाल में है आज भी
राज्य गढ़, किला और पानी

और भी सुंदर, सुंदर है
रमा वीरों की कहानी
मेरा प्यारा देश है भारत
मुझे जान से प्यारा.....

बाबूजी

तुम क्या गए, मेरे बाबूजी,
मेरे जीवन में रहता एक खालीपन हमेशा बाबूजी,

जितना तुम सोचते थे मेरे बारे में,
उतना कोई नहीं सोचा, मेरे बारे में बाबूजी,

बेटी होने के बाद भी तुमने,
खूब खिलाया, पढ़ाया लिखाया था मुझे बाबूजी,

काबिल बनाकर मुझे, मेरे ही,
पैर पर खड़ा भी किया था, तुमने बाबूजी,

बेटी के लिए पिता का होना,
कितना जरुरी होता, मुझे आज समझ आया बाबूजी,

क्यों माँ के पास ऐसे छोड़ गए,
तुम दोनों की ही जरूरत थी, मुझे बाबूजी,

तुम्हारा,मेरा बिन ब्याह करा के,
यूँ दूनिया से चले जाना,बहुत रूलाता है मुझे बाबूजी,

जीवन की मेरी हर ख्याति पर,
तुम जितना खुश होते, उतना कोई नहीं होता बाबूजी,

काश.. मेरी खुशी पर तुम रहते,
हर खुशी पर एक कमी रहती, तुम बिन बाबूजी,

अपना ये भी तो फर्ज निभाते,
ऐसे क्यों चले गए "गुड्डन" से रूठ कर बाबूजी!

रिश्ता

जाने आज कैसे कैसे लोग हो गए,
सामने होते देख
अत्याचार, फिर भी मौन हो गए,
अत्याचारों का खौफ इतना ज्यादा है कि
सज्जन इंसान भी बेज़ुबान हो गए,

छोटी छोटी
बच्चियों को देख
बूढ़े भी आज जवान हो गए,
उनको अपना हवस का शिकार बनाकर
लोगों के सामने
बूढ़े बड़ी चालाकी से शरीफ हो गए,

रिश्तों के भी
देखो ना कैसे खरीददार हो गए,
दूसरे की बहन बेटियों को
बहला फुसला कर
उन्हें बेचकर वो अमीर हो गए,

देश के पढ़े लिखे लोग
अपने ही भारतीय बंधुओं को
बरबाद करने के लिए एकजुट हो गए,
बहुत ही दुख होता है
आज के इंसान रमा पूरे शैतान जो हो गए।

हरियाली

देखो, धरा पे फिर से बरखा रानी आ गई,
देखो, आज धरा पर फिर मस्ती छा गई,

देखो, धरती पर फिर हरियाली सी आ गई,
देखो, बादल पर काली काली घटा छा गई,

देखो, मौसम में थोड़ी सी नमी आ गई ,
देखो, किसानों के चेहरे पे खुशी छा गई,

देखो, अब नदी नाले भरने की पारी आ गई,
देखो, चारों ओर हरित तृणों से छा गई,

देखो, खेतों में खार भरने की पारी आ गई,
"रमा" पृथ्वी में नये फूल खिलने की खुशी छा गई,

मजदूर

मेरे प्यारे भारतीय साथी, बंधुओं
आज मुझे कोई ऐसा मंदिर बताओ?
जहाँ मैं ना जाऊँ
लेकिन....
घर बैठे बैठे गरीबों की
गरीबी दूर करने की
पूजा कर, वरदान मांगू
और वो वरदान मुझे जल्द ही मिल जाए।

मेरे प्यारे देशवासियों
आज मुझे कोई ऐसा मज्जिद बताओ?
जहाँ मैं ना जाऊँ
घर में बैठे बैठे
दीन दुखियों का दर्द कम हो
नमाज पढ़ूँ, दुआ मांगू
और वो दुआ मेरी कबूल हो जाए।

क्योंकि बहुत दुख होता है मुझे
अपने ही देश के
अपने ही भारतीय
गरीब, मजदूर, बेबस, लाचार बंधुओं की
दयनीय हालत देखकर
कृषि प्रधान देश कहलाने वाले भारत के
लोगों को ही भूख से तड़पता, भीख मांगते हुए
जब देखती 'रमा', मन बेहद दुखी हो जाता।

कोशिश

चलो हम सभी मिलकर
एक नेक काम की
शुरुआत करते है,
जैसे...... कि
सरहद के पार दुश्मनों से
हमारे वीर, जवान योद्धा
देश को बचाते है,
वैसे..... ही
हम देश के अंदर
छिपे हुए दोमुंहे
गद्दारो से हम
देश की स्वंय
रक्षा करते है,
ऐसा करके हम
अपना राष्ट्रीय हित की
भावना को निभाते है,
भेदभाव की नीति
छोड़कर हम सब
चलो अब रमा अपना
सही कर्तव्य निभाते है।

मासूम

जाने कैसे, वो लोग होते,
जो नारी की इज्जत करना,
निज मान सम्मान के खिलाफ,
समझते है आज भी, इसलिए,
मासूम बेटियों, नारियों से तक,
अपने बात की शुरुआत भी,
अपनी गंदी मानसिकता के चलते,
अशोभनीय शब्दों से ही करते।

जाने कैसे, वो लोग होते,
जो अपने देश में ही रहते हुए,
अपने लोगों को अंदर ही अंदर,
बांट बांट कर,सिर्फ अपना,
वर्चस्व बनाने की खातिर,
नफरत फैला रहे है और,
इतना ज्यादा जहर पाले मन में,
कि सच को भी पूरा झूठ कहते।

जाने कैसे, वो लोग होते,
जो अबोध, मासूम, नादान,
प्यारे प्यारे बच्चों को भी,
अपनी दुश्मनी भंजाने के लिए,
या फिर हवस का शिकार बनाने,
बड़ी बेरहमी से मारते, पीटते,
यहाँ तक की, मौत के घाट तक,
"रमा" उतारकर खुश रहते।

अबोध

देखो
प्रकृति में
कितने
छोटे छोटे
नन्हें मुन्ने
प्यारे प्यारे
फल, फूल आ रहे है।

ये.......
अबोध, नादान
अपना जीवन संवारने
प्रकृति के साथ
प्रकृति के
रंग ढंग में
एकदम ढल रहे है।

इतना तो समझते है
वो सब मासूम
कि, मिलकर रहने में ही
सबकी जिंदगी सुखदायी
खुशहाल होगी
इसलिए वो
प्रकृति परिवार के साथ
रमा मिल रहे है।

पुण्य कार्य

चलो भारतीयों हम सब मिलकर एक ऐसा दीप जलाएं,
दूर होए भेदभाव का अंधियारा, सच्चा प्रेम फिर फैलाएं,

कोई भी जाति, धर्म की नारी हो उसका सम्मान सिखाएं,
नारी को सिर्फ नारी समझे, अपनों को भी यही बताएं,

बाल श्रमिकों को हम सब मिलकर सेठों से मुक्त कराएं,
अपने अधिकार के साथ अपने कर्तव्यों को ऐसे निभाएं,

चलिए,साहित्यकारों अब हम अपना एक और फर्ज निभाएं,
अपने साथ दूसरों का भी सही इतिहास सबके सामने लाएं,

चलिए, हम सब अपने अपने पुण्य कार्य में लगे "रमा"
और फिर अपने प्यारे भारत देश को विश्व गुरु बनाएं।

भलाई

माना कि ये जमाना, बेहद खराब है,
इसलिए तो इसे, कलयुग कहा गया है।

लेकिन, हे मानव, तू अपना काम कर,
जितना बन सकता, बस, तू भलाई कर।

मत बट तू किसी, धर्म, वर्ग, जाति में,
नेकी कर महान बन, तू मानव जाति में।

प्राचीन इतिहास देख, कितना गौरवशाली है,
तू भी उसी पूर्वज की, कहीं न कहीं निशानी है।

देखो वीर शहीदों को, लड़ते है वतन के लिए,
उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दो, शांति से रहो वतन के लिए,

मत करो छल, कपट, जो भी है, जैसे भी है,
बहुत हो गया "रमा" हम सब भारतीय जो है।

गहना

तेरा प्यार, तेरा एहसास, मेरे सजना,
तेरे से ही है, मेरा जीवन सजना,

मेरा गहना तो, बस....तू है सजना,
तेरे से ही है, मेरा श्रंगार सजना,

मेरे हर कार्य में तेरा साथ रहना सजना,
मेरा मनोबल बहुत ही बढ़ाता है सजना,

तू जब होता पास मेरे जो सजना,
स्वर्ग से भी सुंदर साथ लगता सजना,

तेरा मुझे प्यार से निहारना सजना,
अपने को खुशनसीब समझती सजना,

तेरा मुझे प्यार से प्यार करना सजना,
"रमा" को बहुत ही भाता है सजना,

सागर

पिता, आसमान जैसे कवच हमारे,
माँ, वसुंधरा समान बड़ी महान है,

भाई, होते पहाड़ों जैसे विशाल हमारे,
बहन, नदियों सी प्रेम निर्मल पहचान है,

बचपन, फूलबगिया जैसे प्यारे हमारे,
जवानी, अनगिने ख्बाबों का भंडार है,

दोस्त, खुशियों का जैसे खजाना हमारे,
जिंदगी में आते हरपल ही जो काम है,

विवाह, फिर नया जैसे जीवन हमारे,
बच्चे, फिर आते बनकर नयी बहार है,

माता, पिता, भाई, बहन, दोस्त हमारे,
"रमा" प्यार के सागर के समान है,

सच

हाँ मैं...... सच हूँ
जिसकी आज कोई
बिल्कुल कद्र नहीं करता
हाँ...... मैं वही सच हूँ।

ठीक उसी तरह
जिस तरह आज कोई
मासूम, लाचार की
बिल्कुल कद्र नहीं करता
हाँ...... मैं वही सच हूँ।

दूसरों का सब लेकर
हो रहे मालामाल जो कोई
छल कपटी, स्वार्थी
बिल्कुल कद्र नहीं करता
हाँ....... मैं वही सच हूँ।

झूठ की जुबान
हर किसी के पास
उसी का करते सब
वर्तमान में सम्मान
मेरा बहुत कम मान है
हाँ....... मैं वही सच हूँ।

एहसास

कैसे सोच लिया तूने
कि, मैं तुझको
बिल्कुल भूल गई हूँ,
कैसे सोच लिया तूने
कि, तेरा प्यार
मैं भूल गई हूँ,

आज भी सुबह मेरी
तेरे नाम से ही शुरू होती है,
धड़कन तो मेरी बस....
तेरे नाम से ही चल रही है,
आंखों में मेरे बस....
आज भी ख्वाब तुझसे ही है।

कानों में मेरे गुंजती
अभी भी तेरी प्यार की बातें है,
आज भी, अभी भी
दिल की तिजोरी में
रमा की बस....
तेरे ही प्यार का एहसास है।

सच्चा प्रेम

कोई फर्क
नहीं पड़ता
अब मुझे
तू रहे पास
या दूर मुझसे
तेरी हर अदा
तेरी हर बात
मेरी रूह में
इस कदर
समाई है
हर सुबह होती है
मेरी तुझसे
हर शाम
तेरे एहसास से
सुहानी होती है
यही
आलौकिक प्रेम ने
हमको रमा
सच्चे प्रेम की
परिभाषा बताई है।

घमंड गरीबों को

आज तक मैंने
अपनी मेहनत की रोटी खाई हैं बाबूजी

नहीं किसी के
खजाने में नजर डाली
ना ही किसी के
जेब में हाथ डाला बाबूजी
रूखी सूखी जो भी मिला
उसी को प्यार से खा लिया बाबूजी

नहीं किसी के
हिस्से की रोटी चुराई बाबूजी
ईमानदारी का पाठ पढाया था मेरे पुर्वजों ने
उसी विरासत को
संभाल रखा है मैंने आज तक बाबूजी

आज की दुनिया में
बेईमान, पाखंडी, चोर
पापी, चालबाज, फरेबी
गद्दारों की फौज देख लगता है
इनसे बहुत अच्छे हैं हम बाबूजी

इसलिए मुझे लगता हैं
हम गरीबों को
अब घमंड कर लेना चाहिए बाबूजी

ईद

ऐ खुदा ....आज तू
हम नालायक बच्चों को
ईद में ऐसी ईदी दे
हम खुद सुधर जाए
ताकि आज का बिगड़ा
माहौल अच्छा हो जाए
और प्रकृति के संग
हम जीना सीख जाए
मानव बनाया तूने तो
हम में मानवता आ जाए
दे रही जीवन जैसे प्रकृति
हम भी देना सीख जाए
बहुत कर लिया खिलवाड़
अब तो हम समझ जाए
दिखाया प्रकृति ने अपना रंग
अब तो हम संभल जाए
दिया है मौका हमें प्रकृति ने
रमा अब तो नेक बन जाए।

बदलाव

लाख कोशिशों के बाद भी,
ना बदल पा रहा इंसान तू,
तुझसे बड़ी प्रकृति है फिर भी,
ना समझ पा रहा इंसान तू,

जब भी मिलता मौका तुझको,
बिच्छू बन कर डंक मारे है तू,
मानव सभ्यता की हर पल,
धज्जियाँ यूँ उड़ावे है तू,

भयानक रूप दिखा रही है,
देख प्रकृति अब तो तू,
छोटा है तू छोटा रहेगा,
अब भी मौका जान जा तू,

करना ही होगा अब तो तुझको,
कर ले अपने में बदलाव तू,
प्रकृति परिवार को समझ,
और अब भी संभल जा तू।

मजदूर

मेरे प्यारे देशवासियों
भारतीय बंधुओं, मेरे साथियों
मुझे कोई ऐसा मंदिर, मज्जिद, चर्च
गुरूद्वारा, पेन ठाना बतलाओ?
जहाँ मैं ना जाऊँ
लेकिन...
घर में बैठे बेठे
मेरी पूजा, इबादत दुआएँ प्रार्थना, अरदास, गोंगो
ये... सब दिल से करूं और गरीबों की गरीबी
दीन दुखियों का दर्द बहुत कम हो जाए
और...... आज
देश के हालात को देखकर लगता
जिन मजदूरों ने अति पीड़ा को सहा
हजार किलोमीटर से
पैदल चलकर अपने पूर्वजों, बुजुर्गों के
पैतृक गाँव में आज फिर लौट कर
विश्वास के साथ अपने घर आए
ऐसे मजदूर भाईयों बहनों पर रहम करो
ना जाएं लौटकर
अब तो
अपने पैतृक सम्पत्ति पर
रहकर अपने जीवन की
फिर नयी शुरुआत करे।

मुसाफिर

ऐ मुसाफिर
तू, रूक ना जाना
मंजिल तेरी
दूर है अभी
जब तक धरा का
हर एक इंसान
ना जागे
तब तक
तू, रूक ना जाना
तेरा काम हैं
निरन्तर ही चलना
चलते चलते ही
कार्य करते जाना है
जैसे नियति करती
अपनी शांत माहौल में
अपना हर कार्य
वैसे ही तुझे अपना
कार्य करते जाना है
इसलिए
तू, रूक ना जाना
ऐ मुसाफ़िर
तू, चलते जाना ।

शब्द

शब्द
में ही सबसे ज्यादा जान होती है,
शब्द
से ही मानव की पहचान होती है,
शब्द
ही इंसानी रिवाज को बताती है,
शब्द
ही इंसान को इंसान से मिलाती है,
शब्द
ही इंसान को इंसान से प्रेम कराती है,
शब्द
ही इंसान को इंसान से अलग कराती है,
शब्द
ही है आखिरी सांस तक साथ निभाती है,
शब्द
से ही रमा अपनों के दिल में समाती है ।

मोहब्बत

मेरा प्यार मेरे
साए की तरह
मेरे साथ रहता,

मेरा यार मेरे
सांस की तरह
मेरे पास रहता,

मेरा ख्वाब मेरे
एहसास की तरह
मेरे साथ रहता,

मेरा खुदा मेरे
आजान की तरह
मेरे करीब रहता,

बस जिससे करती
मोहब्बत रमा
वही उससे दूर रहता।

प्रश्नचिन्ह

ना जाने आज कैसा ये,
देश का मंजर हो गया है,
हर शख्स पर पहरे गहरे,
और शक का आलम हो गया है,

देश का हर एक शख्स,
देशभक्ति की बात करता हैं,
देश में ही रहकर वो छुपकर,
अपनों पर कत्ले वार करता है,

नारी की भी इज्जत देखो,
छोटी बड़ी, जाति से होती हैं,
जबकि नारी तो नारी होती है,
उसकी जात सिर्फ नारी होती हैं,

जाति पाति,धर्म का जहर,
तेजी से फैलता ही जा रहा है,
बात बात पर लड़ाई रमा
एकता पर प्रश्नचिन्ह् लगा रहा है।

झूठे लोग

दिल में भरी है नफरते फिर भी,
कैसे लोग गले लगा लेते है,

लोगों की झूठी तारीफों से भी,
कैसे लोग बहुत खुश लेते है,
सच्चे प्रेम से बनी इमारत भी,
कैसे लोग यंहा मिटा देते है,

अपने को उठाने की खातिर भी,
कैसे लोग दूजे को गिरा देते है,
देश की ऐतिहासिक धरोहर को भी,
कैसे लोग अपनी बता देते है,

हिन्दू मुस्लिम, ईसाई में भी,
कैसे लोग इंसान को बांट देते है,
मासूमों का सब छीनकर भी,
कैसे लोग उन्हे ही दोषी बोल देते है,

देश में सरेआम कत्ल करने में भी,
कैसे लोग कातिलों को पनाह देते है,
बड़े कारखाने बनाने के लिए भी,
कैसे लोग गरीब बस्तियाँ जला देते है,

देश को बांटने में लगे है आज भी,
कैसे लोग वो खुशियाँ मना लेते है,
मुंह से मीठा बोलकर आज भी,
कैसे लोग पीठ मे खंजर भौंकते है,

समझ नहीं आ रहा है आज भी,
कैसे लोग देश की बरबादी देख रहे है,
बुद्धिजीवी है देश में आज भी,
रमा लेकिन लोग समझा नहीं पा रहे है।

आत्मा नदियो की रो रही है

सदियो से देखती आ रही हूँ
मेरी हालत एक नहीं सुधर रही है,
सबकी कहलाती मैं जीवनदायिनी
लेकिन मेरी ही कद्र नहीं हो रही है,
मईया, माता के नाम से बुलाते
पर इज्जत दिल से नहीं हो रही है,
रेत निकाल निकाल कर काया
मेरी पूरी तरह बदल दी जा रही है,
मलमूत्र, रासायनिक पदार्थ से
मेरी पवित्रता खत्म हुई जा रही है।

हरी भरी धरती ओढ़ ली गर्मी की
चादर फिर भी समझ नहीं आ रही है,
भाई बंधु मेरे कई हो गए लुप्त
फिर भी आज लापरवाही हो रही है,
सौंदर्य है मेरा लबालब पानी
पर मेरी खूबसूरती नहीं बढ रही है,
आस्तित्व खतरे में है फिर भी
मेरी लोगो को चिंता नहीं हो रही है,
कई वादे कसमे किए लोगो ने
रमा लेकिन पूरी नहीं हो रही है।

मानवता

मानव रूपी जीवन मिला जब तुम सबको यार,
क्यों? शैतानो के जैसे, फिर करते हो काम।

मानव की जाति होती, मानवता से भरपूर,
क्यो? बुरे कर्मो से मानवता पर लगाते हो धूल।

सृष्टि के हो, हे मानव तुम सबसे श्रेष्ठ सृजनकार,
क्यों? ठीक से काम ना कर, करते अपने को शर्मसार।

वसुंधरा के गर्भ में जैसे है, अनगिनत हीरे मोती,
तेरे भी अंदर है छुपे हुए, देख अनमोल मोती।

अब तो खोलो, अपने मन के हे मानव तुम द्‌वार,
देखो, सोचो, फिर समझ कर करो, तुम काम।

एक कदम भरोसे का

बस.... एक कदम तू
अपने भरोसे का रख
फिर देख सारा जहां तेरा होगा
अधूरी, बंद रखी थी जो तूने
अनगिनत ख्वाहिशे
पूरा होता दिखेगा
आसमान छूने का
सपना तेरा भी जरूर पूरा होगा
तू भी नहीं किसी से कम
बस इतना सा ही तुझे सोचना होगा
फिर देखना
मंजिल तेरे कदमो के नीचे
और आसमान भी सलाम करेगा
नारी तू
धरती के समान
सबल, जननी, जीवनदायिनी
प्रेम का सागर
तेरे बिना संसार अधूरा
और नहीं कोई तुझ सा दूजा
तुझे इसे अच्छे से
अब समझना ही होगा
बस तुझे साबित करने के लिए
अपना कदम
समयानुसार अब बढाना ही होगा।

पेड़ की व्यथा

पेड़ पूछे कुल्हाड़ी से,
क्यों तू वार करे है मुझ पे,
तेरा दिल नहीं दुखता क्या,
अपनो पर ही वार कर के।

कुल्हाड़ी बोला मैं क्या जानू,
क्या करना चाहिए मुझे,
तेरे तन का ही हिस्सा,
ये सब कराता है मुझे।

सोच कर फिर पेड़ बोला,
सच बता रहा है तू मुझे,
मेरा अपना ही हिस्सा,
मारने में लगा रहता है मुझे।

ऐसा भी दिन आएगा सोच,
पेड़ फूट फूट रोने लगा,
अपनी परवरिश पे रमा
उसे बहुत दुख होने लगा।

धड़कन

नहीं भूला जाता वो एहसास
प्यारा प्यारा आज भी माँ को,
कोख में जब बच्चे ने मारी
पहली लात प्यार से माँ को।

नहीं भूली जाती वो धड़कन
धक धक आज भी माँ को,
उसकी मिली थी पहली धड़कन
अपने बच्चे से जब माँ को।

नहीं भूला जाता कोमल स्पर्श
रूह तक समाया जो माँ को,
रोम रोम पूरा खिल उठा था
उस छुअन से जब माँ को।

नहीं भूला जाता उस पल को
आज भी रमा' माँ को,
मुस्कुरा कर पहली बार पुकारा
बच्चे ने माँ, जब माँ को।

पुलवामा अमर शहीदो को नमन

सोचो शहीदो की माँओ को कैसा लगा होगा,
जब बेटो को गोद से अंतिम विदा किया होगा।

सोचो शहीदो के पिता को कैसा लगा होगा,
जो बेटा देता कंधा उसे जब कंधा दिया होगा।

सोचो शहीदो की बहन को कैसा लगा होगा,
रक्षा करने वाला भाई जब कफन में दिखा होगा।

सोचो शहीदो की पत्नी को कैसा लगा होगा,
भरी आँखो से आखिरी बार जब चूम कर विदा किया होगा।

सोचो शहीदो की मंगेतर को कैसा लगा होगा,
डोली लाने वाले की अर्थी को जब खुद ने विदा किया होगा।

सोचो शहीदो के दुग्धमुँहे उन बच्चो का रमा
जिन्होंने बिना देखे पिता को मुखाग्नि दिया होगा।

बारिश

बारिश की बूँदे ही
धरती और आकाश को मिलाती है,
बारिश की बूँदे ही
वसुंधरा की पूरी प्यास बुझाती है,
बारिश की बूँदे ही
सारे चमन को पूरा महकाती है,
बारिश की बूँदे ही
धरती पर पूरी हरियाली फैलाती है,
बारिश की बूँदे ही
किसानो के मुख पे खुशी ले लाती है,
बारिश की बूँदे ही
सूखी नदियों को पूरा भर जाती है,
बारिश की बूँदे ही
नदियों का समुद्र से संगम कराती है,
बारिश की बूँदे ही
प्रकृति की खूबसूरती को बढाती है,
बारिश की बूँदे ही
वनस्पतियो में जान डाल जाती है,
बारिश की बूँदे ही
पिया मिलन की आस जगाती है,
बारिश की बूँदे ही
नयी खुशियों के सपने दिखाती है,
बारिश की बूँदे ही
रमा फिर एक नयी प्यास जगाती है।

ट्राइबल कला कृति

पहले भी
राजा रानियों को
ट्राइबल समाज की
कला कृतियाँ पसंद थी,
और आज फिर
फिल्मी दुनिया की
मशहूर अभिनेत्री
रानी मुखर्जी को
ट्राइबल समाज की
कला कृतियाँ रास आई है।
उसने अपने पति को
रिझाने व खुश
करने के लिए
डिंडोरी के ट्राइबल
कलाकारों को
अपने घर मुम्बई बुलाई है।
मुम्बई जैसे शहर में
वो अपना घर
अद्भुत, आकषर्ण
बनवाना चाहती है।
जो दिखे बेहद खूबसूरत रमा
ऐसा कलाकृत्ति से सजाना चाहती है।

मायने

ऐ.... जिंदगी
तू भी बड़ी अजीब खेल खेल रही है
कुछ दिन पहले जो
सबेरे से ही उठते भागते
घूमते फिरते रहते थे
उन्हें भी घर में
सुबह से लेकर शाम, रात तक
पूरा बैठा दी है।
जो पहले घर से
बाहर निकल कर सोचते थे
खुली हवा बाहर अच्छे दोस्त मिलते है
उनसे ही आज
तूने पूरी दूरी करवा दी है।
और फिर अपने
सिर्फ अपने परिवार में
प्रेम से रहना सिखला दी है
परिवार का महत्व बतला दी है
जिन परिवार के सदस्य बाहर है
उन्हें उनका मान बतला दी है
बाहर के खाने, घर के खाने में
प्यार का तड़का समझा दी है।
ऐ जिंदगी तूने तो
हर एक आदमी के
जीने का सलीका ही पूरी बदल दी है
और जिंदगी की सारी
सच्चाई इंसान के सामने ला दी है
कितनी सुविधा, असुविधा में जी सकता है इंसान
इन सबके मायने एक ही झटके में
रमा जिंदगी ने सबको बता दी है।

चिंतन

मैं महिला हूँ तो, महिलाओं की बात करूंगी,
सर्वप्रथम माता सावित्री बाई फुले को नमन करूंगी।

चिंतन तो, ज्योतिबा फुले का मानना ही होगा,
सबसे पहले क्यों? पढ़ाया सावित्री बाई को ये जानना होगा।

जानते थे वे जिस घर की नारी पढ़ी लिखी होगी,
उस घर की सुंदरता, स्वर्ग से कम नहीं होगी।

सावित्रीबाई ने भी मान रखा अपने जीवन साथी का,
ठान ली उसने भी नारियों को शिक्षा का अधिकार दिलाने का।

अब "रमा" हम सबको भी गाँव गाँव में जाना ही होगा,
जहाँ ना पहुंची शिक्षा, वहाँ अपना कर्तव्य निभाना होगा।

प्रकृति का दर्द

आज प्रकृति कह रही है,
खूब किया खिलवाड़ मेरे साथ मानव ने,
मेरे ही आंगन में पल कर,
मुझ पर ही छेद छेद किया मानव ने,

प्रेम की जगह नफरत फैला कर,
मेरे ही टुकड़े कर बाँट दिया मानव ने,
स्वार्थी स्वभाव के कारण मेरे,
जन्म दिए जीवों को मारा मानव ने,

अपने हवस का शिकार बनाया,
बुद्धिजीवी कहलाने वाले ही मानव ने,
मेरे नन्हें मुन्ने फूल,पेड़ पौधों का,
बड़ी बेरहमी से कत्ल किया मानव ने,

मेरी बड़ी बड़ी नदियों को भी,
मौका मिलते ही दूषित किया मानव ने,
मेरे बदन में जहरीले चीजों को,
बुरी तरह से दफनाया मानव ने,

मेरी सबसे प्यारी कृति मासूम बच्चे,
उसको भी मजदूर बनाया मानव ने,
देवी स्वरूप बेटी नारियों की इज्जत,
लूट मेरा भी अपमान किया मानव ने,

मेरी देखरेख, मुझे समझने वालों को,
मुझसे ही अलग किया मानव ने,
माँ हूँ करके माफ करते आई रमा
लेकिन देख मेरा ही बुरा हाल किया मानव ने।

हृदय तल से नमन

खुद की परवाह कम, लेकिन हमारे लिए ज्यादा सोच रहे है,
ऐसे मेरे डॉक्टर भाई बहनों को मेरा शत शत नमन है,

सच्ची सेवा भाव से जो लगाती मरहम और दवा दे रही है,
ऐसी मेरी महान ममतामयी बहनों को मेरा शत शत नमन है,

बेमौसम बारिश के बीच में भी रात भर चौराहे पर खड़े है,
ऐसे मेरे पुलिस वाले भाईयों को मेरा शत शत नमन है,

नगर, शहर और पर्यावरण को जो साफ करने में तत्पर लगे है,
ऐसे मेरे दमदार सफाईकर्मी भाई बहनों को मेरा शत शत नमन है,

शासन प्रशासन के वो सभी जो अपनी ड्यूटी पर डटे है,
ऐसे सब अधिकारी कर्मचारी को मेरा शत शत नमन है,

देश विदेश की खबर, जान जोखिम में डाल कर ला रहे है,
ऐसे मेरे मीडिया से जुड़े लोगों को भी मेरा शत शत नमन है,

समाज सेवा आज निस्वार्थ भाव से जो लोग कर रहे है,
ऐसे मेरे सभी भारतीय बंधुओ को मेरा शत शत नमन है,

आज जो कोरोना महामारी को खत्म करने में सहयोग दे रहे है "रमा"
ऐसे सभी तपस्वी मानव को मेरा हृदय तल से शत शत नमन है।

नाम - सुश्री रमा देवी तेकाम

साहित्य नाम - रमा प्रेम-शांति

पिता का नाम - लिंगों.- प्रेम सिंह तेकाम

माता का नाम - श्रीमती शांति देवी तेकाम

जन्मतिथि - ०५ जुलाई ७२, जबलपुर (मप्र)

वर्तमान पता - बालाघाट (मप्र)

मोबाइल न. - ८४५८९३२८००

शिक्षा - एम. ए (हिन्दी साहित्य , समाजशास्त्र) बी. टी. आई

कार्यक्षेत्र - शासकीय शिक्षक

अन्य कार्यक्षेत्र - सामाजिक, खेल, साहित्य, शिक्षा, सांस्कृतिक एवं कला।

सामाजिक क्षेत्र - असहायों की मदद, गरीब बच्चों की शिक्षा हेतु सहयोग, महिलाओं में सामाजिक जागरूकता जाग्रत हेतु कार्य, युवाओं को भी राष्ट्र प्रेम के लिए प्रेरित करना आदि कार्य निरंतर करना।

खेल का क्षेत्र - स्वयं राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी, वर्तमान सॉफ्टबाल कोच- शाला एवं जिले के बच्चों को राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर पर पहुँचाने हेतु कोच व मार्गदर्शक की भूमिका।

साहित्य क्षेत्र - लेखन-कविता, गीत, गजल , लघुकथा, संस्मरण, आलेख।

सांस्कृतिक क्षेत्र- बच्चों एवं महिलाओं को सामने लाना ।

प्रकाशन - १. एहसास ए जिंदगी, २. दर्द जख्मों के, ३. आपातकालीन में सृजन फुलवारी (०३ काव्य संग्रह), लोकजंग समाचार पत्र एवं गोंडवाना समय समाचार पत्र से अधिकतर कविता, लेख एवं अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर वार्तालाप, आकाशवाणी बालाघाट द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रसारण, वूमन आवाज इंदौर, सहमत संस्था बालाघाट, आश्रय संस्था बालाघाट एवं अन्य समाचार पत्रों में ।

सम्मान - अंर्तराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर-खेलकूद प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर द्वितीय स्थान, सामाजिक, शिक्षा, साहित्य, बाबू जगजीवनराम कला, संस्कृति एवं साहित्य अकादमी द्वारा वीरांगना सावित्रीबाई फूले राष्ट्रीय सम्मान, प्रतिमा रक्षा सम्मान समिति करनाल (पंजाब) राष्ट्रीय रत्न अवार्ड, भारतीय दलित साहित्य अकादमी धमतरी खेल रत्न अवार्ड, अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के प्रत्येक सम्मान समारोह में शामिल होने के साथ-साथ, राष्ट्रीय, राज्य, जिले एवं स्थानीय स्तर पर अनेकों सम्मान।

लेखन का उद्देश्य - समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करना, सामाजिक जागरूकता हेतु प्रयास एवं तर्क वितर्क की सोच विकसित हेतु, महिलाओं को सामने लाने हेतु निरंतर प्रयास, बालिका शिक्षा ।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9424765259, ईमेल - antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-244-9

मूल्य 250/-